اٰیاتھا ١١٨ | ٢٣ سُوۡرَۃُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ مَکِّیَّۃٌ ٧٤ | رکوعاتھا ٦

सूरए मुअमिनून मक्किय्या है, इस में एक सो अठ्ठारह आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿١﴾ الَّذِیۡنَ ہُمۡ فِیۡ صَلَاتِہِمۡ خٰشِعُوۡنَ ۙ﴿٢﴾ وَ
बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं[2] और

الَّذِیۡنَ ہُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ ۙ﴿٣﴾ وَ الَّذِیۡنَ ہُمۡ لِلزَّکٰوۃِ فٰعِلُوۡنَ ۙ﴿٤﴾
वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते[3] और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं[4]

وَ الَّذِیۡنَ ہُمۡ لِفُرُوۡجِہِمۡ حٰفِظُوۡنَ ۙ﴿٥﴾ اِلَّا عَلٰۤی اَزۡوَاجِہِمۡ اَوۡ مَا مَلَکَتۡ
और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर

اَیۡمَانُہُمۡ فَاِنَّہُمۡ غَیۡرُ مَلُوۡمِیۡنَ ۚ﴿٦﴾ فَمَنِ ابۡتَغٰی وَرَآءَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ
जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि इन पर कोई मलामत नहीं[5] तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही

ہُمُ الۡعٰدُوۡنَ ۚ﴿٧﴾ وَ الَّذِیۡنَ ہُمۡ لِاَمٰنٰتِہِمۡ وَ عَہۡدِہِمۡ رٰعُوۡنَ ۙ﴿٨﴾ وَ الَّذِیۡنَ
ह़द से बढ़ने वाले हैं[6] और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द की रिआ़यत करते हैं[7] और वोह जो

ہُمۡ عَلٰی صَلَوٰتِہِمۡ یُحَافِظُوۡنَ ۘ﴿٩﴾ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡوٰرِثُوۡنَ ۙ﴿١٠﴾ الَّذِیۡنَ
अपनी नमाज़ों की निगह्बानी करते हैं[8] येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस

وقف لازم

1 : सूरए मुअमिनून मक्किय्या है इस में छ[6] रुकूअ़ और एक सो अठ्ठारह आयतें हैं और एक हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और चार हज़ार आठ सो दो ह़र्फ़ हैं। **2 :** उन के दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता है और उन के आ'ज़ा साकिन होते हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ़ येह है कि इस में दिल लगा हो और दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और गोशए चश्म से किसी त़रफ़ न देखे और कोई अ़बस (फ़ुज़ूल) काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए इस त़रह़ कि इस के दोनों किनारे लटक्ते हों और आपस में मिले न हों और उंग्लियां न चटख़ाए और इस क़िस्म के ह़रकात से बाज़ रहे। बा'ज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ़ येह है कि आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए। **3 :** हर लह्व व बात़िल से मुज्तनिब रहते हैं। **4 :** या'नी इस के पाबन्द हैं और मुदावमत (हमेशा अदा) करते हैं। **5 :** अपनी बीबियों और बांदियों के साथ जाइज़ त़रीक़े पर क़ुरबत करने में। **6 :** कि ह़लाल से ह़राम की त़रफ़ तजावुज़ करते हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि हाथ से क़ज़ाए शह्वत करना ह़राम है। सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को अ़ज़ाब किया जो अपनी शर्मगाहों से खेल करते थे। **7 :** ख़्वाह अमानतें अल्लाह की हों या ख़ल्क़ की और इसी त़रह़ अ़ह्द ख़ुदा के साथ हों या मख़्लूक़ के साथ सब की वफ़ा लाज़िम है। **8 :** और उन्हें उन के वक़्तों में उन के शराइत़ो आदाब के साथ अदा करते हैं और फ़राइज़ व वाजिबात और सुनने नवाफ़िल सब की निगह्बानी रखते हैं।

www.dawateislami.net

يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ

की मीरास पाएंगे वोह उस में हमेशा रहेंगे और बेशक हम ने आदमी को

مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۚ﴿۱۲﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۪﴿۱۳﴾ ثُمَّ

चुनी हुई मिट्टी से बनाया[9] फिर उसे[10] पानी की बूंद किया एक मज़्बूत ठहराव में[11] फिर

خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا

हम ने उस पानी की बूंद को ख़ून की फटक किया फिर ख़ून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां

فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ

फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत में उठान दी[12] तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सब से बेहतर

الْخٰلِقِيْنَ ؕ﴿۱۴﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ﴿۱۵﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

बनाने वाला है फिर उस के बा'द तुम ज़रूर[13] मरने वाले हो फिर तुम सब क़ियामत के दिन[14]

تُبْعَثُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَ لَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖۗ وَ مَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ

उठाए जाओगे और बेशक हम ने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं[15] और हम ख़ल्क़ से

غٰفِلِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖۗ

बे ख़बर नहीं[16] और हम ने आस्मान से पानी उतारा[17] एक अन्दाज़े पर[18] फिर उसे ज़मीन में ठहराया

وَ اِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۭ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۚ﴿۱۸﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

और बेशक हम उस के ले जाने पर क़ादिर हैं[19] तो उस से हम ने तुम्हारे लिये बाग़ पैदा किये खजूरों

وَّ اَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿۱۹﴾ وَ شَجَرَةً

وقف لازم

और अंगूरों के तुम्हारे लिये उन में बहुत से मेवे हैं[20] और उन में से खाते हो[21] और वोह पेड़

9 : मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन्सान से मुराद यहां हज़रते आदम हैं। 10 : या'नी उस की नस्ल को 11 : या'नी रेहूम में 12 : या'नी उस में रूह डाली, उस बेजान को जानदार किया, नुत्क़ और सम्अ़ और बसर (बोलने, सुनने, देखने की सलाहिय्यत) इनायत की। 13 : अपनी उम्रें पूरी होने पर 14 : हिसाब व जज़ा के लिये 15 : इन से मुराद सात आस्मान हैं जो मलाएका के चढ़ने उतरने के रस्ते हैं। 16 : सब के आ'माल, अक़्वाल, ज़माइर को जानते हैं, कोई चीज़ हम से छुपी नहीं। 17 : या'नी मींह बरसाया 18 : जितना हमारे इल्मो हिक्मत में ख़ल्क़ की हाजतों के लिये चाहिये। 19 : जैसा अपनी क़ुदरत से नाज़िल फ़रमाया ऐसा ही इस पर भी क़ादिर हैं कि उस को ज़ाइल कर दें, तो बन्दों को चाहिये कि इस ने'मत की शुक्र गुज़ारी से हिफ़ाज़त करें। 20 : तरह तरह के। 21 : जाड़े और गरमी वग़ैरा मौसिमों में और ऐश करते हो।

www.dawateislami.net

تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَیْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَ صِبْغٍ لِّلْاٰكِلِیْنَ ﴿۲۰﴾ وَ اِنَّ

पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है[22] ले कर उगता है तेल और खाने वालों के लिये सालन[23] और बेशक

لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِیْكُمْ مِّمَّا فِیْ بُطُوْنِهَا وَ لَكُمْ فِیْهَا مَنَافِعُ

तुम्हारे लिये चौपायों में समझने का मक़ाम है हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेट में है[24] और तुम्हारे लिये उन में बहुत

كَثِیْرَةٌ وَّ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ عَلَیْهَا وَ عَلَی الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ لَقَدْ ع

फ़ाएदे हैं[25] और उन से तुम्हारी ख़ूराक है[26] और उन पर[27] और किश्ती पर[28] सुवार किये जाते हो और बेशक

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई

غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۲۳﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا

ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[29] तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले[30]

هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ یُرِیْدُ اَنْ یَّتَفَضَّلَ عَلَیْكُمْ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ

येह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने[31] और अल्लाह चाहता[32]

لَاَنْزَلَ مَلٰٓىٕكَةً ۚۖ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیْۤ اٰبَآىِٕنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا

तो फ़िरिश्ते उतारता हम ने तो येह अपने अगले बाप दादाओं में न सुना[33] वोह तो नहीं मगर

رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِیْنٍ ﴿۲۵﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا

एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माने तक उस का इन्तिज़ार किये रहो[34] नूह़ ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा[35] इस पर कि

كَذَّبُوْنِ ﴿۲۶﴾ فَاَوْحَیْنَاۤ اِلَیْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا وَ وَحْیِنَا فَاِذَا

इन्हों ने मुझे झुटलाया तो हम ने उसे वह़्य भेजी कि हमारी निगाह के सामने[36] और हमारे हुक्म से किश्ती बना फिर जब

22 : उस दरख़्त से मुराद ज़ैतून है। 23 : येह उस में अ़जीब सिफ़त है कि वोह तेल भी है कि मनाफ़ेअ़ और फ़वाइद तेल के उस से ह़ासिल किये जाते हैं, जलाया भी जाता है, दवा के त़रीक़े पर भी काम में लाया जाता है और सालन का भी काम देता है कि तन्हा उस से रोटी खाई जा सकती है। 24 : या'नी दूध ख़ुश गवार मुवाफ़िक़े त़ब्अ़ जो लत़ीफ़ ग़िज़ा होता है। 25 : कि उन के बाल खाल ऊन वग़ैरा से काम लेते हो। 26 : कि उन्हें ज़ब्ह़ कर के खा लेते हो। 27 : ख़ुश्की में 28 : दरियाओं में 29 : उस के अ़ज़ाब का जो उस के सिवा औरों को पूजते हो। 30 : अपनी क़ौम के लोगों से कि 31 : और तुम्हें अपना ताबेअ़ बनाए। 32 : कि रसूल को भेजे और मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाए 33 : कि बशर भी रसूल होता है। येह उन की कमाले ह़माक़त थी कि बशर का रसूल होना तो तस्लीम न किया पथ्थरों को ख़ुदा मान लिया और उन्हों ने ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام की निस्बत येह भी कहा 34 : ता आं कि (यहां तक कि) उस का जुनून दूर हो, ऐसा हुवा तो ख़ैर वरना उस को क़त्ल कर डालना। जब ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हुए और उन के हिदायत पाने की उम्मीद न रही तो ह़ज़रते 35 : और इस क़ौम को हलाक कर 36 : या'नी हमारी ह़िमायत व ह़िफ़ाज़त में।

www.dawateislami.net

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ

हमारा हुक्म आए[37] और तन्नूर उबले[38] तो उस में बिठा ले[39] हर जोड़े में से दो[40]

وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ

और अपने घर वाले[41] मगर उन में से वोह जिन पर बात पहले पड़ चुकी[42] और उन ज़ालिमों के मुआमले में मुझ से

ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى

बात न करना[43] येह ज़रूर डुबोए जाएंगे फिर जब ठीक बैठे किश्ती पर तू और तेरे साथ

الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ

वाले तो कह सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें उन ज़ालिमों से नजात दी और अ़र्ज़ कर[44]

رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सब से बेहतर उतारने वाला है बेशक इस में[45]

لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾ ج

ज़रूर निशानियां हैं[46] और बेशक ज़रूर हम जांचने वाले थे[47] फिर उन के[48] बा'द हम ने और संगत (क़ौम) पैदा की[49]

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

तो उन में एक रसूल उन्हीं में से भेजा[50] कि अल्लाह की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं

ع ٢ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ ع وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

तो क्या तुम्हें डर नहीं[51] और बोले उस क़ौम के सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़िरी[52]

37 : उन की हलाकत का और आसारे अ़ज़ाब नुमूदार हों **38 :** और उस में से पानी बरआमद हो तो येह अ़लामत है अ़ज़ाब के शुरूअ़ होने की **39 :** या'नी किश्ती में हैवानात के **40 :** नर और मादा। **41 :** या'नी अपनी मोमिना बीबी और ईमानदार औलाद या तमाम मोमिनीन। **42 :** और कलामे अज़ली में उन का अ़ज़ाब और हलाक मुअ़य्यन हो चुका। वोह आप का एक बेटा था कन्आन नाम (का) और एक औ़रत कि येह दोनों काफ़िर थे। आप ने अपने तीन फ़रज़न्दों साम, हा़म, याफ़िस और उन की बीबियों को और दूसरे मोमिनीन को सुवार किया कुल लोग जो किश्ती में थे उन की ता'दाद अठत्तर थी। निस्फ़ मर्द और निस्फ़ औ़रतें। **43 :** और उन के लिये नजात न त़लब करना, दुआ़ न फ़रमाना। **44 :** किश्ती से उतरते वक़्त या उस में सुवार होते वक़्त **45 :** या'नी हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए में और उस में जो दुश्मनाने हक़ के साथ किया गया **46 :** और इब्रतें और नसीहतें और क़ुदरते इलाही के दलाइल हैं। **47 :** उस क़ौम के हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को उस में भेज कर और उन को वा'ज़ो नसीहत पर मामूर फ़रमा कर ताकि ज़ाहिर हो जाए कि नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले कौन नसीहत क़बूल करता और तस्दीक़ व इताअ़त करता है और कौन ना फ़रमान तक्ज़ीब व मुख़ालफ़त पर मुसिर रहता है। **48 :** या'नी क़ौमे नूह के अ़ज़ाब व हलाक के **49 :** या'नी आ़द व क़ौमे हूद। **50 :** या'नी हूद عَلَيْهِ السَّلَام और उन की मा'रिफ़त उस क़ौम को हुक्म दिया **51 :** उस के अ़ज़ाब का कि शिर्क छोड़ो और ईमान लाओ। **52 :** और वहां के सवाब व अ़ज़ाब वग़ैरा।

بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَ اَتْرَفْنٰهُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ

को झुटलाया और हम ने उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी में चैन दिया[53] कि येह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम

یَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَ یَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۝٣٣ وَ لَىِٕنْ اَطَعْتُمْ

खाते हो उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी में से पीता है[54] और अगर तुम किसी अपने जैसे

بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝٣٤ اَیَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَ كُنْتُمْ

आदमी की इत़ाअ़त करो जब तो तुम ज़रूर घाटे में हो क्या तुम्हें येह वा'दा देता है कि तुम जब मर जाओगे और

تُرَابًا وَّ عِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۝٣٥ هَیْهَاتَ هَیْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ۝٣٦

मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे इस के बा'द फिर[55] निकाले जाओगे कितनी दूर है कितनी दूर है जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[56]

اِنْ هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا نَمُوْتُ وَ نَحْیَا وَ مَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِیْنَ ۝٣٧

वोह तो नहीं मगर हमारी दुन्या की ज़िन्दगी[57] कि हम मरते जीते हैं[58] और हमें उठना नहीं[59]

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۣافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّ مَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِیْنَ ۝٣٨

वोह तो नहीं मगर एक मर्द जिस ने **अल्लाह** पर झूट बांधा[60] और हम उसे मानने के नहीं[61]

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝٣٩ قَالَ عَمَّا قَلِیْلٍ لَّیُصْبِحُنَّ

अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा इस पर कि उन्हों ने मुझे झुटलाया **अल्लाह** ने फ़रमाया कुछ देर जाती है कि येह सुब्ह़ करेंगे

نٰدِمِیْنَ ۝٤٠ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّیْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا

पछताते हुए[62] तो उन्हें आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने[63] तो हम ने उन्हें घास कूड़ा कर दिया[64] तो दूर हों[65]

---

53 : या'नी बा'ज़ कुफ़्फ़ार जिन्हें **अल्लाह** तआला ने फ़राखि़ये ऐश और ने'मते दुन्या अ़त़ा फ़रमाई थी अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगे : 54 : या'नी येह अगर नबी होते तो मलाएका की त़रह़ खाने पीने से पाक होते। उन बात़िन के अन्धों ने कमालाते नुबुव्वत को न देखा और खाने पीने के औसाफ़ देख कर नबी को अपनी त़रह़ बशर कहने लगे। येह बुन्याद उन की गुमराही की हुई चुनान्चे इसी से उन्हों ने नतीजा निकाला कि आपस में कहने लगे : 55 : क़ब्रों से ज़िन्दा 56 : या'नी उन्हों ने मरने के बा'द ज़िन्दा होने को बहुत बईद जाना और समझा कि ऐसा कभी होने वाला ही नहीं और इसी ख़याले बात़िल की बिना पर कहने लगे 57 : इस से उन का मत़लब येह था कि इस दुन्यवी ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी नहीं सिर्फ़ इतना ही है 58 : कि हम में कोई मरता है कोई पैदा होता है। 59 : मरने के बा'द, और अपने रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत उन्हों ने येह कहा 60 : कि अपने आप को उस का नबी बताया और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी। 61 : पैग़म्बर عَلَيْهِ السَّلَام जब उन के ईमान से मायूस हुए और उन्हों ने देखा कि क़ौम इन्तिहाई सरकशी पर है तो उन के ह़क़ में बद दुआ़ की और बारगाहे इलाही में 62 : अपने कुफ़्र व तक्ज़ीब पर जब कि अ़ज़ाबे इलाही देखेंगे। 63 : या'नी वोह अ़ज़ाब व हलाक में गिरिफ़्तार किये गए। 64 : या'नी वोह हलाक हो कर घास कूड़े की त़रह़ हो गए। 65 : या'नी ख़ुदा की रह़मत से दूर हों अम्बिया की तक्ज़ीब करने वाले।

www.dawateislami.net

لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۱﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿۴۲﴾ مَا

ज़ालिम लोग फिर उन के बा'द हम ने और संगतें (क़ौमें) पैदा कीं[66] कोई

تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿۴۳﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا

उम्मत अपनी मीआ़द से न पहले जाए न पीछे रहे[67] फिर हम ने अपने रसूल भेजे

تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّ

एक पीछे दूसरा जब किसी उम्मत के पास उस का रसूल आया उन्हों ने उसे झुटलाया[68] तो हम ने अगलों से पिछले मिला दिये[69] और

جَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۴۴﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى

उन्हें कहानियां कर डाला[70] तो दूर हों वोह लोग कि ईमान नहीं लाते फिर हम ने मूसा

وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۴۵﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उस के भाई हारून को अपनी आयतों और रोशन सनद[71] के साथ भेजा फ़िरऔन और उस के दरबारियों की त़रफ़

فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿۴۶﴾ فَقَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا

तो उन्हों ने ग़ुरूर किया[72] और वोह लोग ग़लबा पाए हुए थे[73] तो बोले क्या हम ईमान ले आएं अपने जैसे दो आदमियों पर[74]

وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿۴۸﴾ وَلَقَدْ

और उन की क़ौम हमारी बन्दगी कर रही है[75] तो उन्हों ने उन दोनों को झुटलाया तो हलाक किये हुओं में हो गए[76] और बेशक

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ

हम ने मूसा को किताब अ़त़ा फ़रमाई[77] कि उन को[78] हिदायत हो और हम ने मरयम और उस के बेटे को[79]

ع ۱۸/۳ ۲ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿۵۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ

निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द ज़मीन[80] जहां बसने का मक़ाम[81] और निगाह के सामने बहता पानी ऐ पैग़म्बरो

66 : मिस्ल क़ौमे सालेह़ और क़ौमे लूत़ और क़ौमे शुऐ़ब वग़ैरा के। **67 :** जिस के लिये हलाक का जो वक़्त मुक़र्रर है वोह ठीक उसी वक़्त हलाक होगी उस में कुछ भी तक़्दीम व ताख़ीर नहीं हो सकती। **68 :** और उस की हिदायत को न माना और उस पर ईमान न लाए **69 :** और बा'द वालों को पहलों की त़रह़ हलाक कर दिया **70 :** कि बा'द वाले अफ़्साने की त़रह़ उन का ह़ाल बयान किया करें और उन के अ़ज़ाब व हलाक का बयान सबबे इ़ब्रत हो। **71 :** मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरा मो'जिज़ात **72 :** और अपने तकब्बुर के बाइ़स ईमान न लाए। **73 :** बनी इसराईल पर अपने ज़ुल्मो सितम से। जब ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام ने उन्हें ईमान की दा'वत दी **74 :** या'नी ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून पर। **75 :** या'नी बनी इसराईल हमारे ज़ेरे फ़रमान हैं तो येह कैसे गवारा हो कि उसी क़ौम के दो आदमियों पर ईमान ला कर उन के मुतीअ़ बन जाएं। **76 :** और ग़र्क़ कर डाले गए। **77 :** या'नी तौरैत शरीफ़, फ़िरऔन और उस की क़ौम की हलाकत के बा'द। **78 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम बनी इसराईल को **79 :** या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को बिग़ैर बाप के पैदा फ़रमा कर अपनी क़ुदरत की **80 :** इस से मुराद या बैतुल मक़्दिस है या दिमश्क़ या फ़िलिस्तीन, कई क़ौल हैं। **81 :** या'नी ज़मीन हमवार फ़राख़ फलों वाली

كُلُوْا مِنَ الطَّیِّبٰتِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ ﴿۵۱﴾ وَ اِنَّ

पाकीज़ा चीज़ें खाओ[82] और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं[83] और बेशक

هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿۵۲﴾ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ

येह तुम्हारा दीन एक ही दीन है[84] और मैं तुम्हारा रब हूं तो मुझ से डरो तो उन की उम्मतों ने अपना काम

بَیْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَیْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَذَرْهُمْ فِیْ غَمْرَتِهِمْ

आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया[85] हर गुरोह जो उस के पास है उस पर ख़ुश है[86] तो तुम उन को छोड़ दो उन के नशे में[87]

حَتّٰى حِیْنٍ ﴿۵۴﴾ اَیَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّ بَنِیْنَ ﴿۵۵﴾ۙ

एक वक़्त तक[88] क्या येह ख़याल कर रहे हैं कि वोह जो हम उन की मदद कर रहे हैं माल और बेटों से[89]

نُسَارِعُ لَهُمْ فِی الْخَیْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا یَشْعُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ هُمْ مِّنْ

येह जल्द जल्द उन को भलाइयां देते हैं[90] बल्कि उन्हें ख़बर नहीं[91] बेशक वोह जो अपने रब

خَشْیَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۵۷﴾ۙ وَ الَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۸﴾ۙ وَ

के डर से सहमे हुए हैं[92] और वोह जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं[93] और

الَّذِیْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا یُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾ۙ وَ الَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ

वोह जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते और वोह जो देते हैं जो कुछ दें[94] और उन के दिल

وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿۶۰﴾ۙ اُولٰٓىٕكَ یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ

डर रहे हैं यूं कि उन को अपने रब की त़रफ़ फिरना है[95] येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं

जिस में रहने वाले ब आसाइश बसर करते हैं। **82 :** यहां पैग़म्बरों से मुराद या तमाम रसूल हैं और हर एक रसूल को उन के ज़माने में येह निदा फ़रमाई गई या रसूलों से मुराद ख़ास सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم हैं या ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام कई क़ौल हैं। **83 :** उन की जज़ा अ़त़ा फ़रमाऊंगा। **84 :** या'नी इस्लाम। **85 :** और फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए यहूदी, नसरानी, मजूसी वग़ैरा। **86 :** और अपने ही आप को ह़क़ पर जानता है और दूसरों को बात़िल पर समझता है इस त़रह़ उन के दरमियान दीनी इख़्तिलाफ़ात हैं। अब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को ख़ित़ाब होता है : **87 :** या'नी उन के कुफ़्र व ज़लाल और उन की जहालत व ग़फ़्लत में **88 :** या'नी उन की मौत के वक़्त तक। **89 :** दुन्या में। **90 :** और हमारी येह ने'मतें उन के आ'माल की जज़ा हैं या हमारे राज़ी होने की दलील हैं ऐसा ख़याल करना ग़लत़ है। वाक़िआ़ येह नहीं है **91 :** कि हम उन्हें ढील दे रहे हैं। **92 :** उन्हें उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि मोमिन नेकी करता है और ख़ुदा से डरता है और काफ़िर बदी करता है और निडर रहता है। **93 :** और उस की किताबों को मानते हैं। **94 :** ज़कात व सदक़ात या येह मा'ना हैं कि आ'माले सालिह़ा बजा लाते हैं। **95 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क्या इस आयत में उन लोगों का बयान है जो शराबें पीते हैं और चोरी करते हैं? फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़ की नूरदीदा! ऐसा नहीं, येह उन लोगों का बयान है जो रोज़े रखते हैं, सदक़े देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं येह आ'माल ना मक़्बूल न हो जाएं।

www.dawateislami.net

وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَیْنَا كِتٰبٌ
और येही सब से पहले उन्हें पहुंचे[96] और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उस की ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है

یَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِیْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا
कि हक़ बोलती है[97] और उन पर ज़ुल्म न होगा[98] बल्कि उन के दिल उस से[99] गफ़्लत में हैं

وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا
और उन के काम उन कामों से जुदा हैं[100] जिन्हें वोह कर रहे हैं यहां तक कि जब हम ने

مُتْرَفِیْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ یَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْـَٔرُوا الْیَوْمَ قف اِنَّكُمْ
उन के अमीरों को अ़ज़ाब में पकड़ा[101] तो जभी वोह फ़रियाद करने लगे[102] आज फ़रियाद न करो हमारी त़रफ़

مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰیٰتِیْ تُتْلٰى عَلَیْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ
से तुम्हारी मदद न होगी बेशक मेरी आयतें[103] तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल

تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِیْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ یَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ
उलटे पलटते थे[104] ख़िदमते ह़रम पर बड़ाई मारते हो[105] रात को वहां बेहूदा कहानियां बकते[106] ह़क़ को छोड़े हुए[107] क्या उन्हों ने बात को सोचा नहीं[108]

اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ یَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ لَمْ یَعْرِفُوْا
या उन के पास वोह आया जो उन के बाप दादा के पास न आया था[109] या उन्हों ने अपने

96 : या'नी नेकियों को, मा'ना येह हैं कि वोह नेकियों में और उम्मतों पर सब्क़त करते हैं। **97 :** उस में हर शख़्स का अ़मल मक्तूब (लिखा हुवा) है और वोह लौहे़ मह़फ़ूज़ है। **98 :** न किसी की नेकी घटाई जाएगी, न बदी बढ़ाई जाएगी। इस के बा'द कुफ़्फ़ार का ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **99 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ से **100 :** जो ईमानदारों के ज़िक्र किये गए। **101 :** और वोह रोज़ बरोज़ तहे तेग़ (क़त्ल) किये गए। और एक क़ौल येह है कि इस अ़ज़ाब से मुराद फ़ाक़ों और भूक की वोह मुसीबत है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुआ़ से उन पर मुसल्लत़ की गई थी और इस क़ह़त़ से उन की ह़ालत यहां तक पहुंच गई थी कि वोह कुत्ते और मुर्दार तक खा गए थे। **102 :** अब उन का जवाब येह है कि **103 :** या'नी आयाते क़ुरआने मजीद **104 :** और उन आयात को न मानते थे और उन पर ईमान न लाते थे। **105 :** और येह कहते हुए कि हम अहले ह़रम हैं और बैतुल्लाह के हमसाया हैं हम पर कोई ग़ालिब न होगा हमें किसी का ख़ौफ़ नहीं। **106 :** का'बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द जम्अ़ हो कर। और उन कहानियों में अक्सर क़ुरआने पाक पर त़ा'न और उस को सेह़्र और शे'र कहना और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में बेजा बातें कहना होता था। **107 :** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप पर ईमान लाने को और क़ुरआने करीम को। **108 :** या'नी क़ुरआने पाक में ग़ौर नहीं किया और इस के ए'जाज़ पर नज़र नहीं डाली जिस से उन्हें मा'लूम होता कि येह कलाम ह़क़ है इस की तस्दीक़ लाज़िम है और जो कुछ इस में इर्शाद फ़रमाया गया वोह सब ह़क़ और वाजिबुत्तस्लीम है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिद्क़ो ह़क़्क़ानिय्यत पर इस में दलालाते वाज़ेह़ा मौजूद हैं। **109 :** या'नी रसूल का तशरीफ़ लाना ऐसी निराली बात नहीं है जो कभी पहले अ़ह्द में हुई ही न हो और वोह येह कह सकें कि हमें ख़बर ही न थी कि ख़ुदा की त़रफ़ से रसूल आया भी करते हैं, कभी पहले कोई रसूल आया होता और हम ने उस का तज़्किरा सुना होता तो हम क्यूं इस रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को न मानते ? येह उ़ज़्र करने का मौक़अ़ भी नहीं है क्यूं कि पहली उम्मतों में रसूल आ चुके हैं और ख़ुदा की किताबें नाज़िल हो चुकी हैं।

رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۶۹﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ

रसूल को न पहचाना[110] तो वोह उसे बेगाना समझ रहे हैं[111] या कहते हैं उसे सौदा (दीवाना पन) है[112] बल्कि वोह तो उन के पास

بِالْحَقِّ وَ اَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَ لَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ

हक़ लाए[113] और उन में अक्सर को हक़ बुरा लगता है[114] और अगर हक़[115] उन की ख़्वाहिशों की पैरवी करता[116]

لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ

तो ज़रूर आस्मान और ज़मीन और जो कोई इन में हैं सब तबाह हो जाते[117] बल्कि हम तो उन के पास वोह चीज़ लाए[118] जिस में उन की नाम वरी थी

فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۷۱﴾ؕ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ

तो वोह अपनी इज़्ज़त से ही मुंह फेरे हुए हैं क्या तुम उन से कुछ उजरत मांगते हो[119] तो तुम्हारे रब का अज्र सब

خَيْرٌ ۖۗ وَّ هُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۷۲﴾ وَ اِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ

से भला और वोह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला[120] और बेशक तुम उन्हें सीधी राह की त़रफ़

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۳﴾ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ

बुलाते हो[121] और बेशक जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से[122]

لَنٰكِبُوْنَ ﴿۷۴﴾ وَ لَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَ كَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

कतराए हुए हैं और अगर हम उन पर रह़म करें और जो मुसीबत[123] उन पर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भट पना (एह़सान फ़रामोशी) करेंगे अपनी सरकशी

110 : और हुज़ूर की उ़म्र शरीफ़ के जुम्ला अह़वाल को न देखा और आप के नसबे आ़ली और सिद्क़ो अमानत और वुफ़ूरे अ़क़्ल (कस्रते दानाई) व हुस्ने अख़्लाक़ और कमाले ह़िल्म और वफ़ा व करम व मुरव्वत वग़ैरा पाकीज़ा अख़्लाक़ व मह़ासिने सिफ़ात और बिग़ैर किसी से सीखे आप के इ़ल्म में कामिल और तमाम जहान से आ'लम (ज़ियादा इ़ल्म वाले) और फ़ाइक़ होने को न जाना क्या ऐसा है **111 :** ह़क़ीक़त में येह बात तो नहीं बल्कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप के औसाफ़ो कमालात को खूब जानते हैं और आप के बरगुज़ीदा सिफ़ात शोहरए आफ़ाक़ हैं। **112 :** येह भी सरासर ग़लत़ और बात़िल है क्यूं कि वोह जानते हैं कि आप जैसा दाना और कामिलुल अ़क़्ल शख़्स उन के देखने में नहीं आया। **113 :** या'नी क़ुरआने करीम जो तौह़ीदे इलाही व अह़कामे दीन पर मुश्तमिल है। **114 :** क्यूं कि उस में उन के ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या की मुख़ालफ़त है इस लिये वोह रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के सिफ़ातो कमालात को जानने के बा वुजूद ह़क़ की मुख़ालफ़त करते हैं। "अक्सर" की क़ैद से साबित होता है कि येह ह़ाल उन में बेशतर लोगों का है चुनान्चे बा'ज़ उन में ऐसे भी थे जो आप को ह़क़ पर जानते थे और ह़क़ उन्हें बुरा भी नहीं लगता था लेकिन वोह अपनी क़ौम की मुवाफ़क़त या उन के त़ा'न व तशनीअ़ के ख़ौफ़ से ईमान न लाए जैसे कि अबू त़ालिब। **115 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **116 :** इस त़रह़ कि इस में वोह मज़ामीन मज़्कूर होते जिन की कुफ़्फ़ार ख़्वाहिश करते हैं जैसे कि चन्द ख़ुदा होना और ख़ुदा के बेटा और बेटियां होना वग़ैरा कुफ़्रिय्यात। **117 :** और तमाम आ़लम का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता। **118 :** या'नी क़ुरआने पाक **119 :** उन्हें हिदायत करने और राहे ह़क़ बताने पर। ऐसा तो नहीं और वोह क्या हैं और आप को क्या दे सकते हैं ? तुम अगर अज्र चाहो **120 :** और उस का फ़ज़्ल आप पर अ़ज़ीम और जो जो ने'मतें उस ने आप को अ़त़ा फ़रमाईं वोह बहुत कसीर और आ'ला, तो आप को उन की क्या परवाह, फिर जब वोह आप के औसाफ़ो कमालात से वाक़िफ़ भी हैं क़ुरआने पाक का ए'जाज़ भी उन की निगाहों के सामने है और आप उन से हिदायत व इर्शाद का कोई अज्र व इ़वज़ भी त़लब नहीं फ़रमाते तो अब उन्हें ईमान लाने में क्या उ़ज़्र रहा। **121 :** तो उन पर लाज़िम है कि आप की दा'वत क़बूल करें और इस्लाम में दाख़िल हों। **122 :** या'नी दीने ह़क़ से **123 :** हफ़्त सालह (सात सालह) क़ह़्त़ साली की।

يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا

में बहकते हुए[124] और बेशक हम ने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा[125] तो न वोह अपने रब के हुज़ूर में झुके और न

يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا

गिड़गिड़ाते हैं[126] यहां तक कि जब हम ने उन पर खोला किसी सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा[127] तो

هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

वोह अब उस में ना उम्मीद पड़े हैं और वोही है जिस ने बनाए तुम्हारे लिये कान और आंखें और

الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ

दिल[128] तुम बहुत ही कम हक़ मानते हो[129] और वोही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया

وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ

और उसी की त़रफ़ उठना है[130] और वोही जिलाए और मारे और उसी के लिये हैं रात और दिन

وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

की तब्दीलें[131] तो क्या तुम्हें समझ नहीं[132] बल्कि उन्हों ने वोही कही जो अगले[133] कहते थे

قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ

बोले क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी और हड्डियां हो जाएं क्या फिर निकाले जाएंगे बेशक

124 : या'नी अपने कुफ़्रो इनाद और सरकशी की त़रफ़ लौट जाएंगे और येह तमल्लुक़ (ख़ुशामद) व चापलूसी जाती रहेगी और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और मोमिनीन की अ़दावत और तकब्बुर जो उन का पहला त़रीक़ा था वोही इख़्तियार करेंगे। **शाने नुज़ूल :** जब क़ुरैश सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुआ़ से सात बरस के क़ह़त़ में मुब्तला हुए और ह़ालत बहुत अब्तर हो गई तो अबू सुफ़्यान उन की त़रफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि क्या आप अपने ख़याल में ''رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ'' बना कर नहीं भेजे गए ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक। अबू सुफ़्यान ने कहा कि बड़ों को तो आप ने बद्र में तहे तेग़ (क़त्ल) कर दिया, औलाद जो रही वोह आप की बद दुआ़ से इस ह़ालत को पहुंची कि मुसीबते क़ह़त़ में मुब्तला हुई फ़ाक़ों से तंग आ गई, लोग भूक की बेताबी से हड्डियां चाब गए, मुर्दार तक खा गए, मैं आप को **अल्लाह** की क़सम देता हूं और क़राबत की। आप **अल्लाह** से दुआ़ कीजिये कि हम से इस क़ह़त़ को दूर फ़रमाए। हुज़ूर ने दुआ़ की और उन्हों ने इस बला से रिहाई पाई, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयतें नाज़िल हुईं। **125 :** क़ह़त़ साली के या क़त्ल के **126 :** बल्कि अपने तमर्रुद (बग़ावत) व सरकशी पर हैं। **127 :** इस अ़ज़ाब से या क़ह़त़ साली मुराद है जैसा कि रिवायते मज़्कूरा शाने नुज़ूल का मुक़्तज़ी है या रोज़े बद्र का क़त्ल। येह इस क़ौल की बिना पर है कि वाक़िअ़ए क़ह़त़ वाक़िअ़ए बद्र से पहले हो। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस सख़्त अ़ज़ाब से मौत मुराद है। बा'ज़ ने कहा कि क़ियामत। **128 :** ताकि सुनो और देखो और समझो और दीनी और दुन्यवी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करो। **129 :** कि तुम ने इन ने'मतों की क़द्र न जानी और इन से फ़ाएदा न उठाया और कानों आंखों और दिलों से आयाते इलाहिय्यह के सुनने देखने समझने और मा'रिफ़ते इलाही ह़ासिल करने और मुन्इमे ह़क़ीक़ी का ह़क़ पहचान कर शुक्र गुज़ार बनने का नफ़्अ़ न उठाया। **130 :** रोज़े क़ियामत। **131 :** इन में से हर एक का दूसरे के बा'द आना और तारीकी व रोशनी और ज़ियादती व कमी में हर एक का दूसरे से मुख़्तलिफ़ होना येह सब उस की क़ुदरत के निशान हैं। **132 :** कि इन से इ़ब्रत ह़ासिल करो और इन में ख़ुदा की क़ुदरत का मुशाहदा कर के मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को तस्लीम करो और ईमान लाओ। **133 :** या'नी उन से पहले काफ़िर।

وَعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ

येह वा'दा हम को और हम से पहले हमारे बाप दादा को दिया गया येह तो नहीं मगर वोही अगली

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾

दास्तानें[134] तुम फ़रमाओ किस का माल है ज़मीन और जो कुछ इस में है अगर तुम जानते हो[135]

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ

अब कहेंगे कि **अल्लाह** का[136] तुम फ़रमाओ फिर क्यूं नहीं सोचते[137] तुम फ़रमाओ कौन है मालिक सातों आस्मानों का

وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ

और मालिक बड़े अ़र्श का अब कहेंगे येह **अल्लाह** ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर क्यूं नहीं डरते[138] तुम फ़रमाओ

مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ

किस के हाथ है हर चीज़ का क़ाबू[139] और वोह पनाह देता है और उस के ख़िलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हें

تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ

इ़ल्म हो[140] अब कहेंगे येह **अल्लाह** ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के फ़रेब में पड़े हो[141] बल्कि हम उन के पास

بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ

ह़क़ लाए[142] और वोह बेशक झूटे हैं[143] **अल्लाह** ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया[144] और न उस के साथ

مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ

कोई दूसरा ख़ुदा[145] यूं होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ ले जाता[146] और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअ़ल्ली (बड़ाई) चाहता[147]

134 : जिन की कुछ भी ह़क़ीक़त नहीं। कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का रद फ़रमाने और उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाने के लिये **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया **135 :** इस के ख़ालिक़ो मालिक को तो बताओ। **136 :** क्यूं कि बजुज़ इस के कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिकीन **अल्लाह** तआ़ला की ख़ालिक़िय्यत के मुक़िर भी हैं, जब वोह येह जवाब दें **137 :** कि जिस ने ज़मीन को और उस की काएनात को इब्तिदाअन पैदा किया वोह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **138 :** उस के ग़ैर को पूजने और शिर्क करने से और उस के मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर होने का इन्कार करने से। **139 :** और हर चीज़ पर ह़क़ीक़ी क़ुदरत व इख़्तियार किस का है। **140 :** तो जवाब दो। **141 :** या'नी किस शैतानी धोके में हो कि तौह़ीद व त़ाअ़ते इलाही को छोड़ कर ह़क़ को बात़िल समझ रहे हो, जब तुम इक़रार करते हो कि क़ुदरते ह़क़ीक़ी उसी की है और उस के ख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता तो दूसरे की इ़बादत क़त़्अ़न बात़िल है। **142 :** कि **अल्लाह** के न औलाद हो सकती है न उस का शरीक, येह दोनों बातें मुहाल हैं। **143 :** जो उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। **144 :** वोह इस से मुनज़्ज़ा है क्यूं कि नौअ़ और जिन्स से पाक है और औलाद वोही हो सकती है जो हम जिन्स हो। **145 :** जो उलूहिय्यत में शरीक हो। **146 :** और उस को दूसरे के तह़ते तसर्रुफ़ न छोड़ता। **147 :** और दूसरे पर अपनी बरतरी और अपना ग़लबा पसन्द करता क्यूं कि मुतक़ाबिल हुकूमतें इसी की मुक़्तज़ी हैं, इस से मा'लूम हुवा कि दो ख़ुदा होना बात़िल है ख़ुदा एक ही है और हर चीज़ उसी के तह़्ते तसर्रुफ़ है।

سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۙ﴿۹۱﴾ عٰلِمِ الۡغَيۡبِ وَ الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا

पाकी है अल्लाह को उन बातों से जो येह बनाते हैं[148] जानने वाला हर निहां व इयां (पोशीदा व ज़ाहिर) का तो उसे बुलन्दी है उन के

ع ۵ ۱۵ ۵ يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۹۲﴾ ع قُلۡ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّىۡ مَا يُوۡعَدُوۡنَ ۙ﴿۹۳﴾ رَبِّ فَلَا تَجۡعَلۡنِىۡ

शिर्क से तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाए[149] जो उन्हें वा'दा दिया जाता है तो ऐ मेरे रब मुझे

فِى الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۹۴﴾ وَ اِنَّا عَلٰٓى اَنۡ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمۡ لَقٰدِرُوۡنَ ﴿۹۵﴾

उन ज़ालिमों के साथ न करना[150] और बेशक हम क़ादिर हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वा'दा दे रहे हैं[151]

اِدۡفَعۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا يَصِفُوۡنَ ﴿۹۶﴾ وَ قُلۡ

सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़्अ़ करो[152] हम ख़ूब जानते हैं जो बातें येह बनाते हैं[153] और तुम अ़र्ज़ करो

رَّبِّ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيۡنِ ۙ﴿۹۷﴾ وَ اَعُوۡذُ بِكَ رَبِّ اَنۡ

कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयातीन के वस्वसों से[154] और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि

يَّحۡضُرُوۡنِ ﴿۹۸﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الۡمَوۡتُ قَالَ رَبِّ ارۡجِعُوۡنِ ۙ﴿۹۹﴾

वोह मेरे पास आएं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए[155] तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिये[156]

لَعَلِّىۡۤ اَعۡمَلُ صَالِحًا فِيۡمَا تَرَكۡتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنۡ

शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं उस में जो छोड़ आया हूं[157] हिश्त (हरगिज़ नहीं) येह तो एक बात है जो वोह अपने मुंह से कहता है[158] और

وَّرَآئِهِمۡ بَرۡزَخٌ اِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَلَاۤ

उन के आगे एक आड़ है[159] उस दिन तक जिस में उठाए जाएंगे तो जब सूर फूंका जाएगा[160] तो न

---

148 : कि उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। **149 :** वोह अ़ज़ाब **150 :** और उन का क़रीन और साथी न बनाना। येह दुआ़ ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ व इज़्हारे अ़ब्दिय्यत है बा वुजूदे कि मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला आप को उन का क़रीन व साथी न करेगा। इसी त़रह़ अम्बिया मा'सूमीन इस्तिग़्फ़ार किया करते हैं बा वुजूदे कि उन्हें अपनी मग़्फ़िरत और इक्रामे ख़ुदावन्दी का इल्मे यक़ीनी होता है येह सब ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ व इज़्हारे बन्दगी है। **151 :** येह जवाब है उन कुफ़्फ़ार का जो अ़ज़ाबे मौऊ़द का इन्कार करते और उस की हंसी उड़ाते थे उन्हें बताया गया कि अगर तुम ग़ौर करो तो समझ लोगे कि अल्लाह तआ़ला उस वा'दे के पूरा करने पर क़ादिर है फिर वज्हे इन्कार और सबबे इस्तिह्ज़ा क्या ? और अ़ज़ाब में जो ताख़ीर हो रही है इस में अल्लाह की ह़िक्मतें हैं कि उन में से जो ईमान लाने वाले हैं वोह ईमान ले आएं और जिन की नस्लें ईमान लाने वाली हैं उन से वोह नस्लें पैदा हो लें। **152 :** इस जुम्लए जमीला के मा'ना बहुत वसीअ़ हैं, इस के येह मा'ना भी हैं कि तौह़ीद जो आ'ला बेहतरी है उस से शिर्क की बुराई को दफ़्अ़ फ़रमाइये और येह भी कि त़ाअ़त व तक़्वा को रवाज दे कर मा'सियत और गुनाह की बुराई दफ़्अ़ कीजिये और येह भी कि अपने मकारिमे अख़्लाक़ से ख़त़ाकारों पर इस त़रह़ अ़फ़्वो रह़मत फ़रमाइये जिस से दीन में कोई सुस्ती न हो। **153 :** अल्लाह और उस के रसूल की शान में तो हम इस का बदला देंगे। **154 :** जिन से वोह लोगों को फ़रेब दे कर मआ़सी और गुनाहों में मुब्तला करते हैं। **155 :** या'नी काफ़िर वक़्ते मौत तक तो अपने कुफ़्र व सरकशी और ख़ुदा और रसूल की तक्ज़ीब और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने के इन्कार पर मुसिर रहता है और जब मौत का वक़्त आता है और उस को जहन्नम में उस का जो मक़ाम है दिखाया जाता है और जन्नत का वोह मक़ाम भी दिखाया जाता है कि अगर वोह ईमान लाता तो येह मक़ाम उसे दिया जाता **156 :** दुन्या की त़रफ़ **157 :** और आ'माले नेक बजा ला कर अपनी तक़्सीरात का

www.dawateislami.net

اَنْسَابَ بَیْنَهُمْ یَوْمَىٕذٍ وَّ لَا یَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِیْنُهٗ

उन में रिश्ते रहेंगे[161] और न एक दूसरे की बात पूछे[162] तो जिन की तोलें[163] भारी हुईं

فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ

वोही मुराद को पहुंचे और जिन की तोलें हलकी पड़ीं[164] वोही हैं जिन्हों ने

خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فِیْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَ هُمْ

अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे उन के मुंह पर आग लपट मारेगी और वोह

فِیْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ اَلَمْ تَكُنْ اٰیٰتِیْ تُتْلٰى عَلَیْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

उस में मुंह चड़ाए होंगे[165] क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं[166] तो तुम उन्हें झुटलाते थे

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَیْنَا شِقْوَتُنَا وَ كُنَّا قَوْمًا ضَآلِّیْنَ ﴿۱۰۶﴾ رَبَّنَاۤ

कहेंगे ऐ रब हमारे हम पर हमारी बद बख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे ऐ हमारे रब

اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ قَالَ اخْسَــٴُـوْا فِیْهَا وَ لَا

हम को दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं[167] रब फ़रमाएगा दुत्कारे (ज़लील हो कर) पड़े रहो इस में और

تُكَلِّمُوْنِ ﴿۱۰۸﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِیْقٌ مِّنْ عِبَادِیْ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا

मुझ से बात न करो[168] बेशक मेरे बन्दों का एक गुरोह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तो हमें बख़्श दे

तदारुक करूं। इस पर उस को फ़रमाया जाएगा **158 :** ह़स्रतो नदामत से। येह होने वाली नहीं और इस का कुछ फ़ाएदा नहीं। **159 :** जो उन्हें दुन्या की त़रफ़ वापस होने से मानेअ़ है और वोह मौत है। (خازن) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि बरज़ख़ वक़्ते मौत से वक़्ते बअ़्स तक की मुद्दत को कहते हैं। **160 :** पहली मरतबा जिस को नफ़्ख़ए ऊला कहते हैं जैसा कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है। **161 :** जिन पर दुन्या में फ़ख़्र किया करते थे और आपस के नसबी तअ़ल्लुक़ात मुन्क़त़अ़ हो जाएंगे और क़राबत की मह़ब्बतें बाक़ी न रहेंगी और येह ह़ाल होगा कि आदमी अपने भाई और मां और बाप और बीबी और बेटों से भागेगा। **162 :** जैसे कि दुन्या में पूछते थे क्यूं कि हर एक अपने ही ह़ाल में मुब्तला होगा। फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा और बा'दे ह़िसाब लोग एक दूसरे का ह़ाल दरयाफ़्त करेंगे। **163 :** आ'माले सालिह़ा और नेकियों से **164 :** नेकियां न होने के बाइस और वोह कुफ़्फ़ार हैं। **165 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि आग उन को भून डालेगी और ऊपर का होंट सुकड़ कर निस्फ़ सर तक पहुंचेगा और नीचे का नाफ़ तक लटक जाएगा, दांत खुले रह जाएंगे (ख़ुदा की पनाह) और उन से फ़रमाया जाएगा **166 :** दुन्या में **167 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोग़ा मालिक को चालीस बरस तक पुकारते रहेंगे उस के बा'द वोह कहेगा कि तुम जहन्नम ही में पड़े रहोगे। फिर वोह परवर्दगार को पुकारेंगे और कहेंगे ऐ रब हमारे हमें दोज़ख़ से निकाल और येह पुकार उन की दुन्या से दूनी उ़म्र की मुद्दत तक जारी रहेगी, इस के बा'द उन्हें येह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है। (خازن) और दुन्या की उ़म्र कितनी है ? इस में कई क़ौल हैं : बा'ज़ ने कहा कि दुन्या की उ़म्र सात हज़ार बरस है। बा'ज़ ने कहा : बारह हज़ार बरस। बा'ज़ ने कहा : तीन लाख साठ बरस। (تذکرہ قرطبی) وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم **168 :** अब उन की उम्मीदें मुन्क़त़अ़ हो जाएंगी और येह अहले जहन्नम का आख़िर कलाम होगा फिर इस के बा'द उन्हें कलाम करना नसीब न होगा रोते चीख़ते डकराते (चिल्लाते) भोंकते रहेंगे।

www.dawateislami.net

وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰۤى

और हम पर रह़्म कर और तू सब से बेहतर रह़्म करने वाला है तो तुम ने उन्हें ठठ्ठा बना लिया[169] यहां तक

اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِیْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّیْ جَزَیْتُهُمُ الْیَوْمَ بِمَا

कि उन्हें बनाने के शुग़्ल में[170] मेरी याद भूल गए और तुम उन से हंसा करते बेशक आज मैं ने उन के सब्र का

صَبَرُوْۤا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآىِٕزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِی الْاَرْضِ عَدَدَ

उन्हें येह बदला दिया कि वोही काम्याब हैं फ़रमाया[171] तुम ज़मीन में कितना ठहरे[172] बरसों की

سِنِیْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّیْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ

गिनती से बोले हम एक दिन रहे या दिन का ह़िस्सा[173] तो गिनने वालों से दरयाफ़्त फ़रमा[174] फ़रमाया

اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِیْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا

तुम न ठहरे मगर थोड़ा[175] अगर तुम्हें इल्म होता तो क्या येह समझते हो कि

خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं[176] तो बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِیْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ یَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ

कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के इ़ज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे

لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

जिस की उस के पास कोई सनद नहीं[177] तो उस का ह़िसाब उस के रब के यहां है बेशक काफ़िरों को छुटकारा नहीं

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿١١٨﴾ ع

और तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे[178] और रह़्म फ़रमा और तू सब से बरतर रह़्म करने वाला

169 शाने नुज़ूल : येह आयतें कुफ़्फ़ारे कुरैश के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ह़ज़रते बिलाल व ह़ज़रते अ़म्मार व ह़ज़रते सुहैब व ह़ज़रते ख़ब्बाब वग़ैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم फ़ुक़रा अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से तमस्ख़ुर करते थे। **170 :** या'नी उन के साथ तमस्ख़ुर करने में इतने मश्ग़ूल हुए कि **171 :** अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से **172 :** या'नी दुन्या में और क़ब्र में **173 :** येह जवाब इस वज्ह से देंगे कि उस दिन की दह्शत और अ़ज़ाब की हैबत से उन्हें अपने दुन्या में रहने की मुद्दत याद न रहेगी और उन्हें शक हो जाएगा इसी लिये कहेंगे : **174 :** या'नी उन मलाएका से जिन को तू ने बन्दों की उ़म्रें और उन के आ'माल लिखने पर मामूर किया। इस पर अल्लाह तआ़ला ने **175 :** ब निस्बत आख़िरत के। **176 :** और आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं, बल्कि तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इ़बादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें। **177 :** या'नी ग़ैरुल्लाह की परस्तिश मह़्ज़ बात़िल बे सनद है। **178 :** ईमान वालों को।

www.dawateislami.net